गोहार

चंद्रेश्वर



www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कविता संग्रह

गोहार

चंद्रेश्वर

आदरणीय डॉ. रंजन विकास
के
सादर
चंद्रेश्वर
16/11/2026

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कविता संग्रह

गोहार

चंद्रेश्वर

भोजपुरी प्रकाशन, नई दिल्ली
www.sbtindia.co.in

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी प्रकाशन
जे-49, गली नं.-38, राजापुरी (मेन रोड)
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

शाखा
24, न्यू ट्रांसपोर्ट नगर, शिवपुरी न्यू कॉलोनी
गोरखपुर (उ.प्र.) 273016

ई-मेल : bhojpuriprakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.sbtindia.co.in
☎ 011 35853664

भोजपुरी कविता संग्रह
गोहार
चंद्रेश्वर
ISBN : 978-93-49584-98-3
प्रथम संस्करण : 2026

© चंद्रेश्वर

मूल्य : ₹ 180.00

मुद्रक: आर. के. ऑफ़सेट प्रोसेस, दिल्ली

GOHAR
By Chandreshwar

www.bhojpurisahityangan.com

समर्पण

नयी पीढ़ी में
शताक्षी
प्रथमेश
हृदयांश
के लिए

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

कविता-क्रम

- चंद्रेश्वर : सत्ता से असहमति के कवि 9
- कवि के ओर से दू गो बात 13

1. बैनीआहपीनाला 17
2. माई रहे से माइए रहे 19
3. खेती-बारी 21
4. अन्नदाता 24
5. सतुआ 28
6. ठाढ़ बा माथ के बल 30
7. बाज़ार में सोना 31
8. आसान हऽ ढिमिलिया खाइल 33
9. अमरफल 35
10. ना पड़े पाला घटाव से 37
11. पियार 38
12. कतो एगो खिलल फूल 40
13. गोहार 42
14. शिकायत पेटी 48
15. तोहार कविता में 51
16. बाक़ी दिल्ली का कम गंधाले सर जी 52
17. लापता सूरज 54
18. केवना डाढ़ि प कोइलर 55
19. ई का हऽ 56
20. कोरोना 58
21. बबुआ के लोरी 59
22. झूठ के थूनी प टिकल दुनिया 62
23. राहे से रौनक बा 64

www.bhojpurisahityangan.com

24.	राह आ ज़िन्दगी	65
25.	जइसे यूक्रेन अकेल बा	66
26.	बुद्ध बनल कठिन	68
27.	दहशतगर्द	69
28.	रावन-राम के कथा	71
29.	दोबरी दुःख	73
30.	ए माई	74
31.	बाप रे बाप	75
32.	ए भाई	76
33.	ए मामा	77
34.	ए हो	78
35.	जिए के ढब ना आइल	79
36.	गजबे ई आइल बा बखत	80
37.	मोरे राजा	82
38.	हरि गुन	84
39.	बबुअवा बोलल	86
40.	भाषा के छल	87
41.	सोखताइल मन	88

www.bhojpurisahityangan.com

चंद्रेश्वर : सत्ता से असहमति के कवि

चंद्रेश्वर के भोजपुरी के एगो स्मृति आख्यान में किरिया-कसम खाए के ठेठ लोक- व्यवहार देख बड़ा अचरज आ आनंद आइल। आपन कवनो बात के सही आ साँच साबित करे खातिर लोग बात-बात प किरिया खाला। एह खातिर लोग के कवनो दूर के कौड़ी ना ले आवे के परेला। लरिकाई में बात-बात प माई किरिया भा विद्या कसम चले आ आगे चल के गांछ तर बइठल लोग गांछ ओर हाथ उठा के गांछ के किरिया खाला, खटिया प बइठल लोग खटिया छू के आ कुदारी लेले लोग लोहा छू के। कबो लोग के जब कुछ अलम ना मिले किरिया खाए के त आसमान ओर हाथ उठावेला। ई त उहे लिख सकेला जे लोक संस्कृति से जुड़ल होला आ लोक संस्कृति के समझ राखेला। चंद्रेश्वर के कवितो में लोक संस्कृति के ताना-बाना बा। कविता में सतुआ बा त ओकरा संगे ओकर मेजनो बा- नून, मरीचा, पियाज आ आम के चटनी। चटनी जदी पुदेना के संगे होखे त का कहे के। सतुआ खाए के जे लोक के तरीका रहे, पिंडी भा घोरुआ। कवि के इयाद में पहिले के ऊ बात बा जब सतुआ गरीब के सहारा रहे आ आज ऊ सुखी-संपन्न लोग के किचेन के चीज हो गइल बा। खेती में काम करे वाला लोग, पशु- मेला में भा राही-बटोही गांछ-बिरिछ तर अंगउछी में सतुआ सान लेत रहे। कवि सतुआ के बात करत चना के खेती प बात

www.bhojpurisahityangan.com

कइल ना भुलाता। अब बहुते मुश्किल हो गइल बा आम किसान खातिर एकर खेती। अब त चना, जौ, बजरा, मसूर, मटर, मडुआ सब किसान के हाथ से निकल कार्पोरेटी हाथ में पहुंच गइल बा। पाकेटबंद सतुआ आ बेसन बाजार में आसानी से मिल जाई । कवि के ध्यान में ई सब बात बा।

लोक आ लोक संस्कृति पर बात करत अतीत के माया-मोह में लपटाए के जादे जोखिम होला। कवि एह बात के समझत बा कि अतीत के मोह में लपटाइल ठीक नइखे। ऊ इहो बात के लेके सजग बा कि महिमामंडन भा झूठबखनला भा बतियवला से बात बने वाला नइखे। जेके दुर्गा, लक्ष्मी कहल लोग, ओकर पानी उतार देल। ऊ किसान के किसाने माने के पक्ष में बाड़न। अन्नदाता माने के पक्ष में ना। अन्नदाता मानल भा कहल झूठ के मुलम्मा चढ़ावल ह। किसान के बदहाली पर परदा डालल आ आंदोलन के धार के कुंद करे के मायावी प्रपंच ह। अन्नदाता आत्महत्या पर मजबूर बा, एह के अनदेखा कइल ह। जेकर आंख से खून के आंसू टपकत बा, ओकर मजाक उड़ावल ह।

विकास के नाम प खेती लायक जमीन प फोरलेन सड़क बन रहल बा, हजारो पेड़ कट रहल बा। सड़क बनल त ठीक बा, बाकी समझे के बा कि विकास केकर हो रहल बा। मुआवजा एक त उचित मिलत नइखे, आ मिलतो बा त ओह से अलग तरह के संकट उत्पन्न हो रहल बा। किसान के बेटा सड़क किनारे होटल खोलत बा, चाह-पान, दारू- शराब आ पकौड़ी बेंचत बा। एगो अलग तरह के सांस्कृतिक संकटो देखे में आ रहल बा। चंद्रेश्वर के कवितन में ई सब दर्ज बा।

www.bhojpurisahityangan.com

न्याय के आगे अन्याय मुँहजोर बा। इतिहास के गलत पाठ आ व्याख्या के बढ़ावा देल जा रहल बा। सच्चाई आ भाईचारा, विचार के विविधता के जगह झूठ, नफरत आ कट्टरता के दखल बढ़त जा रहल बा। मौजूदा सत्ता एह सबके जगह आ बढ़ावा दे रहल बा। चंद्रेश्वर के कविता में एह के आलोचना बा। सत्ता से सवाल आ असहमति चंद्रेश्वर के कविता के एगो आपन स्वर बा। आज के अस्सी प्रतिशत से अधिक भोजपुरी साहित्य सत्ता से इयारी के साहित्य ह। भोजपुरी के मंच पर सत्ता के दखल बा आ कवि- लेखक लोग सत्ता के चाकर। चंद्रेश्वर के लेखन एह से अलग बा।

'दिल्ली का कम गंधाले सर जी!' कविता में बिहार के लोग के हीन समझे वाली मानसिकता पर बहुत धीम आ फरियादी स्वर में प्रतिवाद बा। बिहार बेशक रोजी- रोजगार, कल-कारखाना आ शिक्षण-संस्थान के मामला में पिछड़ल बा। एहिजा के लोग देश के अन्य राज्य के अलग-अलग शहरन में मेहनत-मजूरी करेला। शौक से ना, मजबूरी में। एह में एह लोग के का कसूर! कसूर जेकर बा, सवाल ओकरा से ना क के , सत्ता आ सरकार से ना क के, आम आदमी के सवाल के घेरा में लेल, हीन समझल बिल्कुल आपत्ति के बात बा। ऊ आपत्ति कविता में दर्ज बा। कविता के शीर्षके एह आपत्ति के अपना में समेटले बा। सवाल त इहो दर्ज बा कि हत्या, बलात्कार, लूट, भ्रष्टाचार, गरीबी से कवनो राज्य नइखे बाँचल। कविता में बड़ा वाजिब बात दर्ज बा कि बिहार देश के बहरी नइखे आ बिहार आ बिहारी के छोड़ के देश के सिर कइसे ऊंचा हो सकेला।

www.bhojpurisahityangan.com

कवि एक जगह बहुत वाजिब बात कहले बा कि खाली नदिये में ना, इंसानो के मन- मिजाज में अब गाद भर गइल बा। नदी के गाद के वजह भी इंसानी गाद बा। गंगा सफाई खातिर करोड़ों के योजना भ्रष्टाचार के चलनी में चू गइल, करोड़ों के पुल भस जाता। आदमी के आदमी उजाड़ रहल बा। कविता जवन गाद के तरफ इशारा करत बा, ओकर व्याख्या जरूरी बा। सत्ता के हक में ई गाद फायदामंद बा। समय के एह मोहाना प सत्ता संपोषित एह गाद के काट खोजल जरूरी बा।

आधुनिक कविता के विकास में कवि लोकगीत के भूमिका महसूस करत बा। कवि एह के लोकगीत के जादू के रूप में देखत बा। चंद्रेश्वर के भोजपुरी कविता गद्य कविता ह, आ कहल जरूरी बा कि भोजपुरी में गीत आ गजल त खूब बा, गद्य कविता में ठीक से काम करेवाला कम कवि बाड़न। चंद्रेश्वर जी के कविता एह के विकास के एगो मजबूत कड़ी साबित होई।

— बलभद्र

9 दिसंबर 2025

www.bhojpurisahityangan.com

कवि के ओर से दू गो बात

'गोहार' भोजपुरी में हमार पहिलका कविता संग्रह हs। एकरा पहिले भोजपुरी में कथेतर गद्य के हमार दू गो कृतियन के प्रकाशन भइल बा। कथेतर गद्य के पहिली कृति 'हमार गांव' छपल रहे साल 2020 में आ दोसरकी 'आपन आरा' छपल साल 2023 में। एह दूनो कृतियन के भोजपुरिया साहित्य समाज के ओर से बढ़िया रिस्पांस मिलल। 'हमार गांव' के पांच साल के भीतर दोसरका संस्करण आ गइल आ 'आपन आरा' के पहिल संस्करणो के स्टाक ख़तम हो गइल बा। ज़ल्दिए एकरो नयका संस्करण आई। एह दूनो कृतियन प हमरा के साल 2024 में सर्वभाषा ट्रस्ट के ओर से भोजपुरी में उत्कृष्ट कथेतर गद्य लेखन खातिर पुरस्कृत आ सम्मानित कइल गइल रहे। ई पुरस्कार आ सम्मान हर साल भोजपुरी के प्रसिद्ध साहित्यकार स्मृति शेष चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के स्मृति में सर्वभाषा ट्रस्ट आ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह स्मृति संस्थान के ओर से दिहल जाला। हमरा के 'सर्व भाषा सम्मान' मिलल रहे 18 फरवरी 2024 के विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान,नयी दिल्ली में, साहित्यकार रामदरश मिश्र के हाथ से। रामदरश मिश्र के जीवन के ऊ शताब्दी बरिस रहे। अब ऊंहा के हमनी के बीच यादन में शेष रह गइल बानी। ऊंहा के ओह साल

www.bhojpurisahityangan.com

'हमार गांव' पढ़ि के आपन प्रतिक्रिया भी देले रहीं, चिट्ठी लिख के। ऊ चिट्ठी अब हमार थाती बा।

'गोहार' हमार भोजपुरी में तीसरकी कृति हऽ। एह में कुल जमा हमार 41 गो चुनिंदा कविता संग्रहित बाड़ी स। हम पद्य-गद्य दूनों में भोजपुरी साहित्य के सर्जना कर रहल बानी। गद्य में स्मृति आख्यान (इयाद कथा) , छिटपुट आलोचना के रचना भइल बा। कविता हम अपना लेखन के आरंभिक दौर से लिख रहल बानी। हमार लेखन के मूल विधा कविता हऽ, बलुक हम कहि सकीला कि कविते हो सकेला। कविता पढ़ि भा लिख के हम अपना भीतर तरी आ तरावट के अनुभव करीला। हमार ग्यान कबो सूखे ना,ऊ संवेदना से जुड़ल रहेला। कविता के सहज आ स्वाभाविक गुन ह s कि ऊ मनुष्य के संवेदना से जोड़ के राखेले। ऊ ओकरा भीतर प्रेम के भाव पैदा करेले त ओज आ वीरता के बोध भी पैदा करेले। कविता सच्चाइयन से जोड़ के मनुष्य जीवन के एगो गति प्रदान करेले। ऊ नैतिक संस्कार देबेले। कविता के बारे में कहल जाला कि ऊ 'मनुष्यता के मातृभाषा' हऽ। सभ्यता -संस्कृति के रचे-गढ़े में मए संसार में ओकर योगदान विशेष रहल बा। ऊ प्रेम आ प्रतिरोध साथ ले के आपन जय जतरा प निकलेले। जइसे एगो बढई बेडौल सूखल काठ से एक से बढ़ि के एक सुन्नर आ नीमन कलाकृतियन के रचना करेले; जइसे एगो लोहार लोहा से बढ़िया-बढ़िया सामान बनावेले; ओइसही कवि शब्दन से कविता के रचना करेलन। कविता से मनुष्य के आत्मा के अंदर के टेढ़ापन दूर हो जाला। ऊ संस्कारित हो जाला। कविता अच्छाई आ बुराई में फरक करे के पाठ पढ़ावेले। ऊ सच आ झूठ के हिगरावे जाने ले। ऊ समाज में फइलल अन्हार के सबसे पहिले चीन्ह लेबे ले। ऊ विवेक आ तर्क

www.bhojpurisahityangan.com

के ज़रिए अंजोर के ओर ले जाले। कविता खलिसा सोहर ना हऽ, ऊ मिरतू राग भी ह ऽ। मर्सिया भी ह ऽ। कविता के बारे में इहो कहल जा सकेला कि ऊ दुधारी तलवार लेखा होले। महान सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी त लिखले बाड़न कि ''कवि के बोल खरग हिरवानी।'' भारत के एगो महान चिंतक आ भोजपुरी के आरंभिक दौर के सेसर कवि गोरखनाथ कहले बाड़न कि सबद के महिमा बहुत बा। ऊ आपन एगो दोहा में कहत बाड़न -

''सबदे मारी सबदे जिलाई सबदे महमद पीर।
ताके भरमि ना भूलो काजी सो बल नहीं सरीर।।''

भोजपुरी हिन्दी खड़ी बोली से पहिले से कविता में बरतल जा रहल बिया। एकर हज़ार साल से ज़्यादा के काव्य परंपरा में एक से बढ़ के एक कवि रतन पैदा भइल बा लोग आ अन्हार में बूड़ल,भुलाइल -भटकल मानवता के राह देखवले बा। संस्कृति आ सभ्यता के रचे -गढ़े में आपन बेसकीमती योगदान देले बा। हमहूं एह राह के एगो राही बानी। अन्हरिया पख में एगो दीया जरावे के कोशिश कइले बानी। एगो गोहार लगवले बानी।

राउर सब के नेह-छोह के राह अगोरत...।

9 दिसंबर 2025

– चंद्रेश्वर
लखनऊ
मोबाइल नंबर - 7355644658

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

बैनीआहपीनाला

प्यार के रंग
कइसन होला
का ख़ूब गाढ़ लाल
ओढ़हुल के फूल नियर

का ख़ूब गाढ़ पीयर
सरसों के फूल नियर

का ख़ूब गाढ़ नीला
अलसी के फूल नियर

का ख़ूब गाढ़ हरियर
पानी के घास नियर

का ख़ूब गाढ़ कत्थई
पाकल सेब नियर

का ख़ूब भक-भक गोर
चाँन के अँजोरिया नियर

आख़िर कइसन होला
रंग प्यार के

का रंग प्यार के
बैंगनी होला

www.bhojpurisahityangan.com

आसमानी होला

नारंगी होला

का प्यार के रंग में
शामिल नइखन स
सब रंग
दुनिया के

एकरा में शामिल
रंग गाढ़ सांवर ...
राम आ किसुन वाला
भा करिया
सूफियन के लबादा वाला

शामिल एह में
बैनीआहपीनाला!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

माई रहे से माइए रहे

माई रहे से माइए रहे
जस के तस
जइसे काल्हुए के जनमल
जनमतुआ होखसु
ओकर बबुआ

बबुआ बबुए रहलन
जनमतुआ से जवान भइल रहलन
सरहद प जाए जोग
बात-बात प रिसियासु
बमकसु छने-छने
एक दिन आइल अइसनो कि
उन्हुका ना अड़ाइल
आ चलि गइल कटार
किरोध में
माइए के गरदन प
बहि चलल धार रकत के
रँगा गइल माटी
आँगन के
बबुआ त बबुए रहलन
भागे लगलन ले के
माई के माटी भइल देह

www.bhojpurisahityangan.com

आ जात-जात दुआरे के सोझा
पहिलकी गली में
फेंका गइलन मुँहकुरिए
घवाहिल भइलन
भल से चूए लागल
मुँह से ख़ून त
माई के करेजवा बोलल-
"आहि रे मोर बबुआ! चोटा गइल-ऽ ...!!"

माई रहे से माइए रहे
जस के तस
जइसे आजुए जनमवले होखे बबुआ के
बबुआ बबुए रहलन
अपना के जनमतुआ से जवान जानसु!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

खेती-बारी

खेतिए-बारी से किसान लोग
रचले-बुनले रहे गझिझन
सरल ताना-बाना

एगो थिराइल समाज आ संस्कृति के
सपना भइल रहे साकार

पहिले तऽ केहुए-केहू पराइल
गाँव-जवार से बाहर ढूँढ़े
रोज़ी-रोज़गार परदेस में
जब फिरंगियन के अइला के बाद
कोड़ा चलल ग़रीब किसानन के पीठ पऽ
लोग गिरमिटिया बने पऽ हो गइल मज़बूर
ई पहिल आन्ही रहे आधुनिकता के

पीढ़ी- दर -पीढ़ी से रहत आवत
रहनी जा हमनी के
एकही जगहिया पऽ...एकही गांव में
सदियन से तीन-चार पीढ़ियन के
लिहले माल-मवेशी...तोता-मैना संग

www.bhojpurisahityangan.com

देश के आज़ादी मिलल सन् 1947 में
आधुनिकता के बयार चलल
विकास के नाम पऽ
किसान के किसानी आ गाँव के
थिराइल समाज में लहर के हिलकोरा उठल
ऊ पुरान सभ्यता धीरे -धीरे
दम तोड़े लागल

ए मनोज भाई! केतना
दिखाई परत बा विपर्यय
एह नयका ग्लोबल समय में
'लोकल' ख़ातिर साँचहूँ
कहाँ हो पावत बा आदमी 'वोकल'
बदलत जा रहल बा
अधम से अधम चाकरी में
उत्तम खेती अब

किसानन के आँखिन से लोर ना
रकत टपकत बा

कहे भर के बा सबका खातिर
मध्यम व्यापार
पकौड़ी-चाह से कब्बो
आगे ना बढ़ पाई
उजड़ल सीमांत किसानन के कारोबार
एह चाकर फोरलेन के किनारे

www.bhojpurisahityangan.com

अब किसान राजा ना
रंक के क़तार में शामिल होई
ज़मीन से मिलल मुआवज़ा ओकरा
बेटा-बेटियन के शादी में खर्च होई

ऊ सरकारी इमदाद से ना
ओकरा ख़ैरात पऽ जीही लोग
बाकिर ऊहो आख़िर कब तक?

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

अन्नदाता

ढेर पुरान बात हऽ
तबो पइसल आ बसल बा
उन्हुका इयादन के पिटारी में
गेहुँअन सांप मतिन
फन कढ़ले

ऊ संपेरे ना,
जानेलन कुल्हि करतब
मदारियो के

ऊ बहुरूपिया हँउवन
भेख बदले में माहिर
हरमेस

कब्बो
उतरवा लिहल करेलन
करन अस वीर के
कवच -कुण्डल
उन्हुकर
चाकर छाती के

www.bhojpurisahityangan.com

कब्बो
माँग लिहल करेलन
दधीचि अस
उदार मनइयन के
देह के मए हड्डियो
मोका अइला पऽ

आपन आजु आ काल्हु
के चमकावे खातिर
सियासत में हतेयो
जायज होला
केवनो बेगुनाह के
उन्हुका ख़ातिर

कब्बो जाति -धरम के
दे के नारा
वोट ख़ातिर बाँटि दिहें
तोहरा लोगन के

नेयाव आ हक़ माँगे ख़ातिर
जब उतरबऽ लोगन
राजधानी के राजमारग पऽ
तऽ छछनावहूँ जानेलन

www.bhojpurisahityangan.com

उन्हुका जिनगी के एगुड़े
मक़सद हऽ
रोआइ -रोआइ मारल
पदा-पदा रोआवल
तोहरा अस लोगन के

ढेर बढ़ि जाला प्रतिरोध तऽ
देश के दरोही बतावेलन
जुझारू लोगन के

आगि लहका के
चूल्हा के तवा प-ऽ
सियासत के रोटियो सेंके
ख़ूब जानेलन आ अतने ना
ललचाइ -ललचाइ के खाइलो
जानेलन
तोहारा लोगन के

ऊ रोज़ रोज़
गाइ-गाइ के/
गुनगुना -गुनगुना के
त कब्बो चीख-चिल्लाइ के
कहेलन तोहरा लोगन के
अन्नदाता ...अन्नदाता !

www.bhojpurisahityangan.com

आ तू लोग हो जाल-ऽ लाचार
अन्हरियो आ अंजोरियो पख में
आतमहतेया खातिर

उन्हुका खलिसा गरब होला
पुरान बातन आ परंपरा पऽ
आ होला त-ऽ होला
जब होला तऽ
डोल जाला
संवसे देसवे

अगर सीखही के बा त-ऽ
सीखो केहू उन्हुका से
खलिसा गरब करे
आ लगावे जय-जयकार
देबे साथ-संग
आँखि मूँद के
नव कुबेरन के।

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

सतुआ

पहिले सतुए रहे निवाला ग़रीब के

जब केहू बाहर जात रहे सफ़र में ओहटा
देशाटन भा तीर्थाटन खातिर त बाँधि लेत रहे
गमछा में सतुआ,नून,हरियर मिर्ची
आ पियाजु के एकाध टुकड़ा

कंवनो चापाकल भा ईनार से
निकाल के पानी लोटा भर
गटक जात रहे केहुओ बेहिचक

तब बिस्लरी बोतल के चलन ना रहे

सतुआ सान के गमछे प खा लिहल जात रहे
ओह समय में जेठ -बैशाख के तपत दुपहरिया में
केवनो पीपल,पाकड़,नीम भा आम-महुआ के छाँव में

पहिले लोग कर लेत रहे गुज़र-बसर सतुए खाइ के

तब बाज़ार में ना बिकात रहे केवनो विदेशी फास्टफूड
जइसे पिज्जा-बर्गर,चाऊमीन भा ममोज़
अब त गाँवो नइखन स बांचल एह सब से

सतुआ त सतुए ह ए मोर बबुआ
एकरा के नून के संग पिंडी बनाके खाइल जा सकेला

www.bhojpurisahityangan.com

पानी में घोलके पिअल जा सकेला

अगर रउरा साधन-संपन्न बानी त एकरा में दूध डालके
देशी घी मिलाके गुड़ भा चीनी के संग खाइल जा सकेला

सतुआ से बनावल जा सकेला विविध व्यंजन
ई मात देबेला हर व्यंजन के

ई आम आ पुदीना,धनिया आ लहसून के
चटनी के संग चटकारा लेके खाइल जा सकेला

पियाजु आ एकर संग-साथ के त का कहे के बा
खिल उठेला स्वाद एकर खाए वाला के जीभ प

गाँव होखे भा शहर अब त सतुआ के मिलल
होत जा रहल बा दिन-प-दिन दुल्हम

पहले सतुआ के नांव लेते पसर जात रहे
लाज के ललाई केतने लोग के चेहरा प
ऊहे अब धनी लोग के किचेन में
रखल जा रहल बा क़ीमती व्यंजन के रूप में
एने सतुआ के काहे ना आओ बाउर दिन
जब चना के फ़सल उगावल दिन-प-दिन कठिन

आ ओहू प जब ई समइए पीछे परल बा
हाथ धोके किसानन के।

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

ठाढ़ बा माथ के बल

भइया हो! काढ़ऽ काढ़ऽ काढ़ऽ करजा
खरीदऽ कार,लऽ मोबाइल
बनावऽ बँगला-कोठी
राजधानी में

करऽ बियाह सवख से बेटी के
बेटा के सरकारी नोकरी खातिर
दऽ घूस

भइया हो! काढ़ऽ काढ़ऽ काढ़ऽ करजा
मनावऽ रोज़ दिवाली
जरावऽ दियरी घीव के
अब नइखे ज़रूरत कि बचा के
पाई पाई
जमा करऽ बैंक में

भइया हो! ई समइए उलटि गइल बा
ठाढ़ बा माथ के बल!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

बाज़ार में सोना

नेयाव एगो अइसन शब्द बा एहघरी
जेवन लुकाइल चलेला हरघरी

हंस अब केहवा बा मानसरोवर वाला

नीर-क्षीर विवेक वाला

ऊ तऽ कब्बे के लुका के बइठल बा
कथा-पुरानन के फाटल-पुरान पन्नन में
किंबदंतियन में
समेटले आपन निज पाँखि
जेवन चुगत रहे पहिले मोतिए
खलिसा सत के

एहघरी कट्टरता से उपजल हिंसा
लउकत बा सगरो दुनिया-जहान में

जारी बा जंग...

हिंसक जानवरो से बाउर
हाल बा हमनी के

ख़ून के पियासल हमनी के
लिहल चाहीला जा जान-परान
एक-दोसरके के

www.bhojpurisahityangan.com

ईमान के तऽ राखि दिहल गइल बा
ताख पऽ कहिए

बुद्धि के बनावल जा रहल बा
जान-बूझि के बंजर

कमज़ोर आ सतावल के परवाह करे वालन के
घटत जा रहल बा संख्या

रोज़-रोज़ खलिसा बढ़त जात बा
रोशनी के तेज़ चमक
छल-फरेब से भरल
जेवना में नइखे सूझत
केवनो सही राह

किछु बेसिए चमकत बा एहघरी
बाज़ार में सोना
बनि के दग-दग पीयर
भरमावत हर छन सभकरा के

हम अइसनो में पावल चाहीला
ओही सोच के
जेवन हिगरावे के दम राखेला
असली आ नकली में !

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

आसान हऽ ढिमिलिया खाइल

आगि धरी एगो कोना में
आ धधके लागी
सँवसे घर

लहरि के एगो उठी
छोटहन हिलकोरा
बीच समुंदर
आ फइल जाई तट तक

आन्ही आई आ बहार ले जाई
मए धूरि-गरदा दुवार पऽ के

एगो ईंट खिसकी आ धीरे-धीरे
भँस जाई सँवसे
सोगहग छेरदवाल

बाकी एगो डेग बढ़ी
तोहार तऽ बढ़ते जाई
आगे के ओर

पहाड़ पऽ चढ़ल कठिन हऽ
...बहुते कठिन बबुअवो
चढ़ल ओकरा चोटी पऽ त
सपना नियर

www.bhojpurisahityangan.com

बाकी आसान हऽ
ढिमिलिया खाइल
ओह पऽ से
तनिको डेग परी
एने-ओने
आ बिचली नजर
रोक ना पाई केहू गिरे से
खाई में अपना के!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

अमरफल

पुरानो से पुरान लोकगीत के
एह आदिम धुन में
अबो अइसन का बा
जेवना के गुनगुनावते भा गावते
गला हमार भरि आवेला
नीर बहेला नैनन से

एह लोकगीत के आख़िरी बंद तक
चहुँपत -चहुँपत भरि उठीला
एगो अजगुत टटकापन से
दरद में गोता लगवला के बादो

एह लोकगीत से
दरद के गहिरारे नाता बा...
ख़ूब गहिरारे

एह में समाइल बा
सँवसे मरम
लोक के

एकरा से ई नतवे तऽ रखले बा जिया के हमरा के
काल के कराल खोह से
निकलले बा
कऽ कऽ बेर

www.bhojpurisahityangan.com

एह लोकगीत के धुन के सुनल
जइसे उतरल बा
गंगा मइया के हिलकोर मारत
अथाह पानी में

दुनिया के बड़हन-बड़हन
कबियन के कबिता में
समाइल बा जेवन जादू
ऊ एकरे त कमाल हऽ

चाहे भाव होखे भा भाखा
भा कहन के अंदाज़
सबमें ईहे छवले रहेला
अमरफल के मिठास बनि के!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

ना पड़े पाला घटाव से

हम पियार कइनी त घिरीना के सही
हम चुननी फूल त केकर गमछा
कांट में फंसी

हम बनवनी हीत त बैरी कहँवा जइहें

सुख हमरा के सींचले बा
त दुख बराबरे तुड़ले बा

हमरा जिनगी में सोहर त मरनी गीतो जुड़ल रहल

अइसन कइसे होई कि जोड़ते जाईं
आ घटाव से कबही पाला ना पड़े

जनम ले ले बानी त मिरतू से कइसन डर।

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

पियार

ओइसे त हमरा जिनगी में
पियार कबहि ना दिखलस
जइसे पानी के ऊपरे
तैरेला तीसी के तेल

पियार हम ओइसनो ना कइनी
जइसन हिन्दी के बम्बइया फिलिम
में करेलन सन हीरो,हीरोइन

पियार से दनाइल
रहत रहीं जा हमनी के
हर बखत, हर मोहड़ा पर जिनगी
के बनावत कुछो अउरी खबसूरत
बे हो हल्ला के

पियार हमरा खातिर
गुलामी ना रहे
आउर जरूरत से जादे आजादियो ना रहे

पियार करते -करते हमनी के बनवनी जा
तिनिका तिनिका जोड़ के खोंता
आ दूर देस से ले अइनी जा ओकरा भीतर दाना

www.bhojpurisahityangan.com

हर मउसम के कइनी जा मुकाबिला
साथे लड़नी जा
साथे हंसनी -रोअनी जा
हर मोरचन पर

केतना बार सोचनी जा
अलगा होखे के बारे में
बाकिर हरदम लागल कि
संभव नइखे ई
मछली से पानी लेखा।

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

कतो एगो खिलल फूल

जब ले डलल सेनुर मांग में
अगिया गइल ऊ ओही घरी से

कबो ना सुतलीं भर नीन
सुख उधिया गइल
पीपर के सूखल पात नियर

जब ले डोली में बइठ के
बिदा भइलीं नइहर से
छछनत बा परान
एक आँजुर पानी बिन

सपनो में लउकत नइखे
कतो एगो खिलल फूल

जब ले भइल बा तोहार संग
ना जिअते बानी
ना मुअते बानी

www.bhojpurisahityangan.com

ना हँसते बानी
ना रोअते बानी

ना तोहरा के छोड़ते बनत बा
ना तोहरा संग रहते बनत बा

तोहार किरिए
बियाहे के बाद जनलीं
कि का होला तिरिया जनम!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

गोहार

हमनी अइसन नगर में
बसे खातिर रहली जा
सरापित
जेहवाँ सलीका के ना
बाँचल रहे
केवनो पड़ोस

सिरमौर बनि के रहे
जिनगी में
तटस्थता
बिना केवनो काम के

प्रतिरोध एह घरी
खलिसा एगो
रूप मानल जात रहे
मूर्खता के

जेकरा किछुओ भेंटा जात रहे
ऊहे मानल जात रहे
रसूख़दार

www.bhojpurisahityangan.com

पद पैरवी पुरस्कारे से
आँकल जात रहे
केवनो आदमी के

सरकारी संस्थानी
'साहित्यभूषण' के
उपाधिए
पहचान बनि गइल रहे
बड़हन साहित्यकार के

जे एक्को दिन क्लास में जाइ के
ना पढ़ावत रहे
ऊहे पावत रहे
शिक्षक शिरोमणि के
सम्मान

चरने चाँपल मानल जात रहे
केहू के सबसे बड़
काबिलियत

प्रतिभा पानी भरत रही स
नवहा कुबेरन के जाके
घरे-घरे
होइ के मज़बूर

www.bhojpurisahityangan.com

डर समाइल रहत रहे
पुरान पंचनो के
नेयाव में
गेहुअन साँप बनि के

ईमान के बात रहे
बहुत दूर के कौड़ी

न्यायाधीशो
घबराइल रहत रहे लोग
फ़ैसला लिखे के पहिले

हिले लागत रहे
ओह लोग के क़लम के नीब

थरथराए लागत रहे
ओह लोग के मेज़

फ़ाइल हवा में उड़ि के
हो जात रही स
ग़ायब

रात-दिन एगो चिरई
लगावत रहत रहे
गोहार ... "खूँटा में मोर दाल बा!"
बाकी बढ़ई से ले के राजा तक

www.bhojpurisahityangan.com

सभे चुप्पी मारि के
बइठल रहत रहे

ढेरखा ले पत्रकारो
भागत रहलन स
सच्चाई से
कोसहन दूर
घटना के असली तथ्यन से
केवनो मतलब ना रहि गइल रहे
ओहनी के

कतो केवनो सत्य के पच्छ में
ना देत रहे सुनाई
जय-जयकार
ऊ त कब के
चलि गइल रहे
खटिया उड़ास के कोमा में
केवनो हेठार के गाँव में
जहवाँ अब्बो सड़क
एगो सपना लेखा रहे

शहर के चौक बाज़ार में
खौफ़ त देखऽ
डोमा जी उस्ताद के

www.bhojpurisahityangan.com

गजानन माधव मुक्तिबोध के कविता
'अँधेरे में' से निकलि के बहरी
दिने-दहाड़े मचावत रहे
गुंडई

ऊ एगो क़ायर समय रहे
जेवना घरी
केवनो गुंडा के गुंडा कहे से
बँचत रहे
शरीफ़ लोग
आ नवका रिवाज़ बनल जात रहे
केवनो ज्ञानिए-गुनी जन के
गुंडा कहे के

झूठ के डंका बाजत रहे
देश-दुनिया में

ओकरे तरफ़दारी में
निकलत रहे बैंडपार्टी
बाजत रहे शहनाई

जिनगी में यारी ना खलिसा
बाँचि गइल रहे दुश्मनी

भरोसा आ उम्मीद जइसन
सुन्नर शब्द बाँचल रहि गइल रहन स

www.bhojpurisahityangan.com

खलिसा कवियन के
कविते में

आदमिए आदमी के
काट खाए खातिर
होखे लागत रहे
बेताब

दाग़दार होखे से
ना डरत रहे केहू
अब ईहे सब तऽ
अलंकरन बाँचल रहे
सभ्य कहाए वाला
लोगन खातिर
एह नयकी सभ्यता में!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

शिकायत पेटी

कवि, तोहार दिमाग़
खलिसा शिकायत पेटी तऽ
ना हो सके

कवि,तोहार हिरदा
खलिसा कुंठा के
कब्रिस्तान तऽ ना हो सके

कवि,तूँ हरमेस सूतल रहे लऽ
गाफ़िल रहे लऽ
गहिरारे नीन में
सपना देखत रहे लऽ
ऊल-जलूल
अगड़म-बगड़म

तोहरा तऽ
अब ना रहि गइल
केवनो मउसम के इंतज़ार

पह फाटल आ बेर डूबल
तूँ नइख देखले
ढेर दिनन से

www.bhojpurisahityangan.com

कवि, अब तोहार केवनो वास्ता
ना रहि गइल
सच्चाइयन से

तुहूँ अब
कराहत बाड़ऽ
महाझूठ के
पहाड़ के नीचे
दबल बाड़ऽ

कवि,तोहरा अब हरमेस
रहत बा तलाश
अवसर के,
पाला बदले में
नेता लोगन से,
रंग बदले में आगे बाड़ऽ
गिरगिटवन से

तूँ सज़ा ना , बराबर चाहे लऽ
पुरस्कारे --पुरस्कार
नोट के तकिया पऽ
सूतल चाहे लऽ
मुड़ी धइ के

जेकरा के गरियावल भा सरापल चाहे लऽ
ओकरे से गलबाँही करे लऽ

चूमल चाहे लऽ हाथ ऊहे
जेवन सनाइल बा ख़ून से

www.bhojpurisahityangan.com

तोहार शब्द डूबल रहत बा
एहघरी चमचई के
गाढ़ चाशनी में !

कवि,तूँ आपन हिरदा के पाट
करऽ किछु चाकर
तज दऽ ईरिखा आ द्वेष

निंदारस से तनिक उठऽ ऊपर
जाग कवि,देखऽ तऽ
तोहरा के गोहरावत बा
तोहरे समय
करुन स्वर में
ले के नाँव
तोहार ...

कवि, साँचो
शब्दन के संगत से
अब बनि जा पहरुआ
हो जा सावधान
एह समय के बहुते
ज़रूरत बा
तोहार ...!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

तोहार कविता में

तोहार कविता में आवत बा
बार- बार देस
तोहरा चिंता में समाइल बा देस
ई पढ़ि-सुनि के अचरज होत बा

तोहरा हियरा में बसल बा गांव
अबहियो भुलाइल नइखऽ
बाप दादा के नाँव
ई सुनि-देखि के अचरज होत बा

मरा जात बा फसल किसानन के
ग़रीब गुरुबन के हाल बा बेहाल
अबहियो भरि जात बा नैन
ई सुनि-देखि के अचरज होत बा

तोहरा बतकही में आ जाला
कबो-कबो देस
दुआर के धवरा बएल
बाबा के बड़का पितरिया लोटा
लहरात टीकासन भरि के सोटा
ई सब देखि सुनि के
अचरज होत बा!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

बाक़ी दिल्ली का कम गंधाले सर जी

एह सुपर फास्ट ट्रेन के सेकेंड क्लास के
स्लीपर कोच नंबर दस के
अट्ठाईस नंबर बर्थ प
जेवन लोअर बा
आ रउरा के मिल गइल बा
सीनियर सिटीजन के नाते
ओकरा में इतराए जोग
कुछुओ नइखे सर जी
दिन के बात बा आ ऊपर से
गरमी परत बा भारी
उमस बा... भीड़ बा आ
दिल्ली चहुंपे के बा हमरो
काल्हुए टेस्ट बा हमार सर जी
रिज़र्वेशन ना करा पवनी हं
अचानके जाए के परत बा
तनिका दवर दे दीं
बइठ लेबे दीं कगरी
रात में लखनऊ के बाद
नीचे चद्दर बिछा लेब सर जी
बाउर जनि मानब
हमार भरोसा राखब

www.bhojpurisahityangan.com

मज़बूरी बा
हम बिहार से बानी सर जी
बिहटा से
बिहारी एतना बाउर ना होला लो
जेतना बदनाम बा लोग
आ ई ट्रेन त राजगीरे से खुलल बिया
आ भरल आ रहल बिया सर जी
अब रउरा का करब सर जी
आख़िर बिहार त एही देश के
नक्शा में शामिल बा सर जी
एह ट्रेन के गंधइला के रिश्ता
ख़ाली बिहारे से कइसे बनत बा सर जी
बाकी दिल्ली का कम गंधाले सर जी
ई अलग-अलग नज़रिया के बात बा सर जी
आ अइसहूं राउर लोअर बर्थ
आ फर्श के बीच के दूरी
दुइए बीत्ता नु बा सर जी!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

लापता सूरज

ई पानी बेपानी बा
एकरा से के पियास बुझाई ?

एह से के नहाई
मलि-मलि के देह
एकरा में त
मिलल बा आर्सेनिक।

हवा में साँस लीहल
कठिन बा
गंगा, सरजू, आ राप्ती में
मारल डुबकी
कठिन बा
घाट प काई बा
ठेहुना में बाई बा
ना एकर दवाई बा
साँईं के कतो नइखे
अता-पता
लापता बा हमार
सूरज दुपहरिये में!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

केवना डाढ़ि प कोइलर

आम-महुआ के उजरि गइल
सउँसे बगइचवे
केवना डाढ़ि प बइठि
बोलिहें कोइलर

के गाई फाग आ चइता
बीता भर के मास्क बान्हि के
मुँह प।
के बजाई झाल
ढोलक आ डफ
के कढ़ाई बोल
फाग आ चइता के
तिवारी बाबा ना रहि गइलन
उन्हुकर बबुआ परइलन
बंबई परदेस

गाँव के घर
ढहि -ढिमिला गइल
शहर साँचो का त
आबाद भइल!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

ई का हऽ

ई पिछला बेर
घोरले रहे ज़हर
फगुनहटे में
लोग समाइल रहे डरे
आपन-आपन घर में

थरिया बाजल
दीया जरल
जयकारा लागल
भारत माता के

मुंह प लागल जाब
भूलल सभे
देखल ख़्वाब

बंद भइल
मिलावल हाथ
तपाक से
चलल एगो फिरंगियन के
नयका शब्द पद
सोशल डिस्टेंसिंग

www.bhojpurisahityangan.com

भरभंड भइल जिनगी
हमार-तोहार
बाकिर आजु ले
पता ना चलल
ई का ह
के ह
सगुन ह कि
निरगुन ह
जीव ह कि जड़ ह
कि हइए ना ह किछु!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

कोरोना

रंग के खेली
गुलाल के लगाई
अबीर के उड़ाई
हाथ के बढ़ाई
गला के मिली
सगरो त समाइल बा
ससुरा कोरोना
कहर आ डर बनि के!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

बबुआ के लोरी

एकदम हलुवा मत बनऽ
बबुआ कि
सराह-सराह के
झूठ-मूठ
बिना दाँतों वाला
घोंट जाए तोहरा के
छनभर में
चुभला-चुभला के

नरम चारा
मत बनऽ
कि दलदल में ठाढ़
कंगन वाला बूढ़ शेर के
तराना कि फसाना
मत सुनऽ

मारे केहू चटकन
तोहरा एगो गाल पऽ
तऽ दोसरका गाल सोझा
मत करऽ

www.bhojpurisahityangan.com

ई परदेस हऽ बबुआ
देखि के केहू के
भोला चेहरा
मत करऽ भरोसा तुरंते

कहे केहू अपना के
सँघतिया तऽ
समझऽ ओकरा के घाती

नदियने में नइखे भरल
ख़ाली गाद
इंसानी दिलो में
भर गइल बा
गादे-गाद

कीचड़ सनल आँखिन के
नीमन से धो लऽ बबुआ
साफ पानी से
ना त भोरे में
खोजे लगबऽ
आसमान में
साँझवाला चंदा

माई-बाप
गाँव-जवार के

www.bhojpurisahityangan.com

रखिह इयाद
ज़रूर बबुआ
ना त बन जाई
शहर तोहरा खातिर
गला के फंदा
केतने बात बा
अंत में एगो बात अवरू कि
रखिह काबू में हरमेस
जीभ आ ... के
मोर बबुआ
ना त केहू ना
बचा पाई
तोहरा के उजड़े से
हे! हो!! मोर बबुआ!!!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

झूठ के थूनी प टिकल दुनिया

एह दुनिया में काम बा
जबुनके के
नीमनका के ना

एही से नीमनका लोग
ना रह पावे
ढेर दिन ले
एह दुनिया में
ओह लोग के विदाई
हो जाला जल्दिए
ऊ लोग ना बना पावेला
केवनो बेढब तालमेल

अझुराइल गोला
बनल रह जाले जिनगी
काँच सूत के
सपूत बने के चक्कर में
ऊ हो जाला लोग
शिकार दनवादूत के

टूटि -टूटि के
बिखरि जाला लोग
धूल में

www.bhojpurisahityangan.com

धूरखेल खेलल
ना होखे बात
सभका बस के।

रंगदारी ना चला पावे सभे
होशियारी ना दिखा पावे सभे
हबकि के बोलल भा काटल
ना सँपरेला ऊ लोग से

आगे के छीनल थरिया
लूट लिहल गरीब के
छज्जा के
खपड़ो आ नरिया
ऊ लोग से ना होखे
हमरा अब ई बुझाला कि
सच्चाई प ना
झूठे के थूनी प
टिकल बिया
ई सोगहग दुनिया

नीमनका ना
जबुनके के रंगे से
रँगाइल बिया
साहु जी के दोकान के
हरियर-पियर आ
ललकी मये बुनिया!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

राहे से रौनक बा

बड़का भइया हो
राह ई चालू हऽ
बीच में एकरा जनि गाड़-ऽ खूंटा
आवत जात केहू के लागि जाई ठेस
दिन-रात चलेला राह ई
बिनती बा तोहरा से करजोर
जनि गाड़ऽ एकरा बीच में खूंटा
भले घर के सोझा के दुआर
हो जाए किछु छोटा

बड़का भइया हो
चले द एह राह के
राहे से रौनक बा
घर-दुआर के!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

राह आ ज़िन्दगी

राह कटेला चलत रहे से
आ समय कटेला
किछु काम करत रहे से
खलिहर बइठल आ
समय खलिहर
खांखर बना देला जिनगी के!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

जइसे यूक्रेन अकेल बा

जइसे यूक्रेन लड़त बा अकेल
जइसे हमला करत रूस बा अकेल
ओइसहीं एहघरी हर आदमी बा लड़त
आपन जिनिगी के जुद्ध अकेलहीं
अपना देस के भीतर
अपना देस के बाहर
आपन जाति,बरन,धरम
मज़हब अवरू नस्ल के
खोल में भा ओकरा बाहर

ई दुनिया रोज़ बदल रहल बिया
बाकिर उलट दिसा में

अब त मिलत बाड़े सन
एक से बढ़ि के एक कसाई
डेगे-डेग प
लिहले हाथ में चोख चाकू
भा दलाल जे कहल जा रहल बाड़े
आपन-आपन देस में सच्चा लाल

पहिले टूटत रहे दिल कबो-कबो
अब त एक्के दिन में टूटत बा ऊ हज़ार बार

www.bhojpurisahityangan.com

खो रहल बाड़े चमक सितारा सब

सब जगह उड़ रहल बा गरदा
धरती ले आसमान तक
धुँआ-धुँआ भइल बा सगरो

लागत बा कि फाटि जाई कान के चदरा
हुँआ-हुँआ भइल बा पँजरो

जेने ले जा दीठि देखाई परि जइहें
केवनो ना केवनो तीसमार खाँ

पनिगर केहवाँ मिलिहें जब पानिए दुल्हम बा
सगरो दुनिया-जहाँन में

देखावे खातिर सब बा बाकी
जइसे यूक्रेन सांचो अकेल लड़त बा
ओइसहीं अकेल लड़त बानी हमहूँ
एह नीच समइया में।

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

बुद्ध बनल कठिन

जुद्ध कइल आसान बा,
बुद्ध बनल कठिन।

मरल-मारल आसान बा,
जियल जिनगी कठिन।

झूठ बोलल आसान बा,
सांच बोलल कठिन।

अन्याय कइल आसान बा,
न्याय कइल कठिन।
आकाश में गरिजल आसान बा,
बरिसल धरती प कठिन।

एह घरी चुपाइल आसान बा,
बोलल त बहुते कठिन।

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

दहशतगर्द

ओहनी के हाथ में लहरावत
अमेरिकन हथियार
कह रहल बाड़े स
कि मेहरारू खलिसा मशीन होली स
बच्चा पैदा करे वाली

ऊ परदा में राखे जोग होली स
रसोई पकावेली स
हमनी नियर मरदन के
सजावेली स सेज
ऊ मए काज निपटा सकेली स
बाकी हवेली भा झोपड़ी के भीतर

असल में ऊ चाहेलन स बरतल
आपन-आपन मेहरारू अन संग
कोठा के पतुरिया लेखा

ऊ त बनल बाड़े स
खलिसा मशीन गन खातिर
राइफल आ गोला-बारूद खातिर
रकत पिए आ बहावे खातिर
आदमियो के कच्चा गोश्त चबाए खातिर
ऊ सिरजन ना,बनल बाड़े स संहार खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

ओहनी के तालिम होला
इल्म ना, बर्बरता खातिर

ऊ आपन क्रूरता के मिसाइल से
चाहेलन स रौंदल
सुंदरता के हरियरपन के

देखल चाहेलन स सगरो
दुनिया जहान में रेते-रेत
बंजरपन

ऊ जहन्नुम में ले गइल चाहेलन स
संवसे इंसानी बिरादरी के

ओहनी के खलिसा
दहशतगर्दे हो सकेलन स
अवरू किछुओ ना
चाहे जेहवां होख सन
धरती के केवनो कोना में!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

रावन-राम के कथा

क क गो रावन
सगरो लउकत
डेग-डेग प
चौक -चौराहा प
बाज़ार में
मैदान में खेल के
खेत-खलिहान प
लगवले दीठि
रावन क क गो

सड़क प
संसद में
विधान सभा में

मठ- मंदिर
मस्ज़िद में
गिरिजाघर में

एक -एक वन के
उजाड़े में लागल
ई दशानन
क क गो दशानन

सब जगह देखल जा सकेला
बस, रेलगाड़ी , हवाई आ

www.bhojpurisahityangan.com

पानी के जहाज़न प सवार
करत सफ़र देश -दुनिया में
त्रिलोक में लिहले चेहरा प
अजब-ग़ज़ब मुस्कान

घर -घर में ...हर मन में
बसल ई दशमुख
क क गो दशमुख

राम आपन -आपन

अलग -अलग द्वीपन में
भटकत- छिछियात राम

निर्वासित आ विस्थापित राम
घर-घर से
वन-वैन से
हर मन से
बाहर होत राम

कइसन चलल आन्ही-बयार
कि उठल बवंडर
कि लागल आगि

हाय -हाय रावन
कि हे राम।

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

दोबरी दुःख

- "कहवां जात बाड़ऽ?"
- "देवघर"
– "गठरी में बान्हि के लवटिह
दोबरी दुःख!"

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

ए माई

"ए माई,दे किछु खाई!"
"का दीं,लऽ ना खा हमार कपार!"

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

बाप रे बाप

बाप रे बाप
हइ देखऽ
एगो अजगर सांप
करे ना केवनो चाकरी
ख़ाली खाइल काम!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

ए भाई

– "ए भाई!"
– "का हो भाई?"
– "दऽ एक्को पाई!"
– "पाईं तब नू दीं
एक्को पाई!"

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

ए मामा

– "ए मामा!"
– "का हो भगिना गामा!"
– "काहें सूतल बाड़ऽ घामा?"
– "बड़बड़ो मत,तोरो बुझाई
जब पहिनबे बियाह के
जोड़ा जामा!"

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

ए हो

– "ए हो!"
- "का हो!"
– "झोरा दऽ बाजार जाई!"
– "झोरे भुलाइल बा तोहरा से!"

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

जिए के ढब ना आइल

पिरीत के डोर टूट गइल
नेह-नाता छूट गइल
भवबंधन कसि गइल
बेमतलब

एहू उमिर में ना आइल
जिए के ढब
काँचे रोटी खा लिहलऽ
गब-गब-गब
पचे त पचावऽ
ना त मुंह मरावऽ!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

गजबे ई आइल बा बखत

रोइ-रोइ के बबुआ चुपा गइल
खरमेंटाव के बाद दिन भर
सोन्हा गइल

लवटल साँझ बेरा घर तक
मुँह बिदुराइल रहे
तनिके पाइ के हरियरी
ऊ फेरु किछु
चोन्हा गइल

जब कम रहे कोरोना त
लाकडाउन भइल
बेसी फइलला प एकरा
गँवें से सरकार
महटिया गइल

झूठे आवत बा आँकड़ा
टीवी न्यूज़ चैनलन प
अख़बारो से सच अब
दूर परा गइल

www.bhojpurisahityangan.com

कवितो के हाल बेहाल बा बहुत
मैराथन में पाँव ओकर
साँचहूं लड़खड़ा गइल

गोली चलल बहुते एनकाउंटर में
चलल बुलडोजर
माफियन के मकानन प
देखते देखत केस रेप के
बढ़िया गइल
गजबे ई आइल बा बखत
बखत प आपन तनिके में
चीन्हा गइल!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

मोरे राजा

दोल्हा-पाती
ओका-बोका
छुपम-छुपाई
चोर-सिपाही
जनि खेलऽ मोरे राजा
पँजरी आ जा तूँ
खियाइबि खाजा सिलाव के
भरि-भरि पेट
काहे करंट मारेलऽ
लाइ - लाइ के नवकी कनूनिया
तूं करंट मारे लऽ

एगो घेरलस महामारी
ई लाचार दुनिया सारी
ऊपर से जनि करऽ
बमबारी मोरे राजा हो
दिमाग़ फाटेला

टीवी प आवता ख़बरिया
सुशांत के भइल बा मडरिया
बालीवुड में नसा के बीमरिया
जस होखे महमरिया

www.bhojpurisahityangan.com

ना धराइल अब ले
एको ख़ूनी मोरे राजा हो
अन्हार लउकेला

कबले देत रहबऽ झांसा
लोगवा परल बा भरमिया में
भारी हो तोहार मोरे राजा

अबकी फाटल ढोल ना मढ़ाई
लोगवा जानि गइल बा सच्चाई
मोरे राजा हो कि पह फाटेला
पूरब के आसमान से
अंजोर लउकेला

चरम प बा महँगाई
चरमे प रोज़गार के छिनाई
देसवा डूबल जात बा
साँचो डूबल जात बा
रसातल में
हे,हो मोरे राजा जी!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

हरि गुन

ए हो, के जानत रहे
ना रहि जाई ज़रूरत
काग़ज़ क़लम सियाही दवात के
हरि गुन लिखा जाई
एहनियो बिना

क़लम के ख़ूबियन प बतकही
सियाही बनावे आ काग़ज़ के
जुगाड़ के तरीका
देखते देखत बहुते
पुरान परि गइल

ई एगो तेज़ बदलत समय रहे
चकमक करत
लकदक चीज़न से
एह में हरि ऊहे हो सकत रहे
जे रहे धनबल...निज भुजबल वाला
भा शासन-सत्ता के सिरमौर
वोट बैंक वाला

एह नएका हरि के भीतर से गायब रहे
दया माया करुना आ भाव छमा के

www.bhojpurisahityangan.com

जेवन लोर बहत रहे कबो-कबो
आंखिन से ऊ दिखावा रहे

एही हरि के गुन गावे खातिर
सोरहो घरी खुलल रहत रहन स
खबरिया चैनल
हज़ारों -हज़ार

ई एगो अइसने समय रहे
जेवना में कइ कइ गो कवि गन
थोरिको असुविधा में परते
चुपाई मार जात रहे
भा पूँछ हिलावे -डोलावे लागत रहे
ज़ादा होखे त मोका प बोलहीं के बेर
पगुराए लागत रहे
भोरहरिए से सांझ तक

एह कवियन के दरकार ना रहे
सच्चाई से केवनो
ऊ दिखावा भरि रहे
पब्लिक के सोझा
असल चीज़ त ऊ रहे
लमहर चेक
आ हरि के भेजल केक
बर्थडे वाला!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

बबुअवा बोलल

चुनाव में कोरोना
कहर ना बरपवलस

स्वामी के जगि में
एतना जुटल रहे भीड़
केहू मास्क ना पहिनल

ना सोशल डिस्टेंसिंग के पालन भइल
कोराना गायब रहे त
ई इसकूल कालेज काहे बंद बा
ईहे ना नू कहाला
आपदा में अवसर

बबुअवा बोलल
त बोलते रहि गइल!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

भाषा के छल

ईहे ह रे बबुअवो
छल - भाषा के
छल-छल छलकत रही
बिछिलहर हो जाई

दान मांगी लोग
पइसा - रुपइया के
आ कही लोग
समरपन निधि के

ई भारी छल ह
समाइल एह तत्सम में
डूबल धरम में
दुनिया जहान संगे!

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

सोखताइल मन

"एहो,मोर बलम जी ! जात बानी
स्वामी जी के जगि में
परबचन सुने,
हमरो काया आ मन साफ़ हो जाई
बिन पानी- साबुन के!"

"ए हो मोर रानी!
दुपहरिया से भइल गधबेर
का ले के लवटल बाड़ू जगि में से"

"ख़ाली काया आपन ऊहे
लपिटाइल माया में
सब बतकही रहि गइल ओहिजे
ग्यान से गरूह!
जाए दीं चलीं अब
बतकूचन छोड़ीं
देर होत बा
चाह-चूह बनावत बानी
आजु रात में लिट्टी चोखा लागी
मन हमरो सोखताइल बा!"

ooo

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com



चंद्रेश्वर

30 मार्च 1960 को बिहार के बक्सर ज़िले के आशा पड़री गांव में एक सामान्य किसान परिवार में जन्म।

उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज से चयनित होने के बाद 01 जुलाई 1996 से एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर में हिन्दी विषय में शिक्षण का कार्य आरंभ किया। 26 वर्षों के शिक्षण कार्य के बाद 30 जून 2022 को विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्ति। संप्रति लखनऊ में रहते हुए स्वतंत्र लेखन कार्य। हिन्दी-भोजपुरी की सभी प्रमुख साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं और आलेखों का प्रकाशन।

'हिन्दवी' की लोकप्रिय वेबसाइट पर चयनित 62 कविताओं का भी प्रकाशन।

तीन हिन्दी कविता संग्रह- अब भी (2010), सामने से मेरे(2017), डुमरांव नज़र आयेगा (2021) प्रकाशित।

एक शोधालोचना की पुस्तक 'भारत में जन नाट्य आंदोलन' (1994) एवं एक साक्षात्कार की पुस्तिका 'इप्टा-आंदोलन : कुछ साक्षात्कार' (1998) का प्रकाशन।

भोजपुरी कथेतर गद्य की दो पुस्तकें– 'हमार गाँव' (2020), 'आपन आरा' (2023) एवं 'मेरा बलरामपुर' (हिन्दी में कथेतर गद्य, 2021-22) का भी प्रकाशन।

सम्मान : 1. भोजपुरी में कथेतर गद्य कृति 'हमार गांव' पर सर्वभाषा सम्मान -2024।
2. रेवांत साहित्य सम्मान -2024

पता : 'सुयश', 631/58, ज्ञान विहार कालोनी, कमता (फ़ैज़ाबाद रोड)
लखनऊ, उत्तर प्रदेश -226028

मोबाइल : 7355644658

ई-मेल : cpandey227@gmail.com

Bhojpuri Prakashan
www.sbtindia.co.in
011 - 35853664

₹180.00

Cover design : SBT Studio
sarvbhashatrust
@sbhashatrust
sarvbhashatrust
sarvbhashatrust
amazon.in/sarvbhashatrust